मानवता के मार्गदर्शक

यह बात एक ऐसा सत्य है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता कि इस्लाम धर्म के पैगंबर हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) के जीवन को जिस भी मनुष्य ने पढ़ा है वह प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका है। आप का जीवन समस्त मानवता के लिए जीवन व्यतीत करने का उच्चतम मार्ग है। और आप के जैसा कोई दूसरा मानवजाति के इतिहास में नहीं मिलता। आपका जीवन हर व्यक्ति के लिए एक ऐसा उदाहरण है जिस की शिक्षाओं पर चलकर एक श्रेष्ठ मानव बना जा सकता है। जिस समय आप ने अरब की धरती पर जन्म लिया वह एक ऐसा युग था कि हर तरह की बुराई और कदाचार समाज में फैला हुआ था। महिलाओं को सम्मान प्राप्त नहीं था और उन्हें मात्र एक मनोरंजन का साधन समझा जाता था। लोग माँओं और बहनों को बाज़ार में बेच दिया करते थे। आपस में छोटी सी छोटी बात पर तलवारें निकल जाती थीं, लोगों को गुलामी का जीवन व्यतीत करना पड़ता था और मानवों का रक्त कोई महत्व नहीं रखता था।

सकारात्मक परिवर्तन

मगर जब आप (अलैहिस्सलाम) दुनिया में इस्लाम की शिक्षा और प्रेम का संदेश लेकर आए तो उसी बिगड़े हुए समाज को इतना परिवर्तित कर दिया कि महिलाओं को समाज में सम्मान की द्रष्टि से देखा जाने लगा, उन्हें अपने

पिता की विरासत में हिस्सा मिला जो पहले नहीं मिलता था, गुलामों को आज़ाद किया जाने लगा और हर ओर सुख शांति का वातावरण हो गया। अरब के लोग अपनी बेटियों को जन्म लेते ही ज़िंदा गाड़ दिया करते थे मगर आप (अलैहिस्सलाम) ने उन बच्चियों को उनका जीवन दिया और इस कुकर्म पर प्रतिबंध लगाया। यही नहीं बल्कि आप ने यह संदेश दिया कि बेटियां तो जन्नत में प्रवेश का कारण हैं, आप फ़रमाते हैं **"जिस ने दो बेटियों की परवरिश की मैं और वह जन्नत में इस तरह प्रवेश करेंगे जैसे यह दो उंगलियाँ (आपने अपनी दो उंगलियाँ मिलाकर यह कहा)"** (तिरमिज़ी 1914) आप हमेशा सत्य ही कहा करते थे यहाँ तक कि आपके शत्रु भी आप को **"सादिक़"** (अर्थात हमेशा सत्य बोलने वाला) व **"अमीन"** (अर्थात जिसके पास कोई वस्तु अमानत के लिए रखी जाए तो वह कभी उसमें से चोरी न करे) कहा करते थे। (सीरतुल मुस्तफ़ा) आप का व्यवहार इतना अच्छा था कि आपके हज़रत ख़दीजा से निकाह के समय आप के चाचा अबू तालिब ने यह कहा **"आप के जैसा किरदार दुनिया के किसी नौजवान का नहीं है"** (अनसाब उल अशराफ़) अर्थात आप जैसा उच्चतम व्यवहार किसी का नहीं क्युंकी आप दया कृपा में सर्वश्रेष्ठ थे।

धैर्य की शिक्षा

जब आप ने अल्लाह का संदेश मक्का के रहने वाले लोगों को बताया तो वह आप के जानी दुश्मन बन गए और विभिन्न प्रकार से आप को और आप के मानने वालों को प्रताड़ित करने की कोशिश करने लगे मगर आप ने धैर्य

और धीरज का उदाहरण देते हुए यह सब कुछ सह लिया। और आपने इस्लाम के अनुयायियों को यह शिक्षा दी **"निसंदेह अल्लाह धैर्य वालों के साथ है"** (क़ुरआन 2:153) मुसलमानों पर बढ़ते अत्याचारों को देखते हुए आपने कुछ लोगों को हबशा प्रवास करने का आदेश दिया और जब अल्लाह का आदेश हुआ तो आप स्वयं भी मक्का को छोड़कर मदीना चले गए परंतु मक्का के लोगों ने वहां भी आप को हानि पहुंचाने के प्रयास बंद नहीं किये।

वीरता का मार्ग

इसी के चलते मक्का का एक क्रूर और अत्याचारी व्यक्ति अबू जहल आपसे युद्ध करने के लिए एक हज़ार लोगों की सेना लेकर बद्र के मैदान में आया और आपके साथ कुल 313 मुसलमान थे जिनके पास जंग का सामान भी नहीं था और न ही उचित भोजन जबकि सामने हज़ार लोगों की सेना जिनके पास घोड़े, तलवारें और उच्चतम भोजन था। मगर फिर भी अल्लाह ने मुसलमानों को विजय प्रदान की। यह बताने का उद्देश्य यह है कि पैगंबर हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) सत्य में विश्वास रखते थे और इतनी विशालकाय सेना को अपने समकक्ष देख कर भी आप (अलैहिस्सलाम) या आपका कोई भी मानने वाला पीछे नहीं हटा बल्कि प्रत्येक ने वीरता के साथ सत्य की लड़ाई लड़ी।

बदला न लेना और क्षमा का संदेश

फिर जब उहुद के मैदान में आप (अलैहिस्सलाम) और मुसलमानों पर दोबारा मक्का वालों ने हमला किया और कई मुसलमान शहीद हुए लेकिन इस कठिन परिस्थिति में भी सत्य को हाथ से जाने नहीं दिया यहां तक कि आपके चहीते चाचा हज़रत ए हमज़ा को जब शहीद करा गया और हिंदा नामी औरत ने उनका शरीर फाड़ कर कलेजा अपने मुंह से चबाया यह देख कर भी आप ने बदला नहीं लिया और न ही यह आदेश दिया कि मुसलमान भी मक्का वालों की लाशों को फाड़ें क्योंकि आप बदले का नहीं क्षमा करने का संदेश लाये थे। (इस घटना को विस्तार से अल-बिदाया वन-निहाया में पढ़ा जा सकता है)

व्यक्तिगत जीवन

आप व्यक्तिगत जीवन में भी इतने उदार और उच्चतम आचरण वाले थे कि जब आपका निकाह हज़रत ख़दीजा से हुआ तो उन्होंने आप को उपहार में एक ग़ुलाम दिये जिनका नाम ज़ैद बिन साबित था, आप (अलैहिस्सलाम) ने उन्हें मुक्त कर दिया और अपने घर में रख लिया, हज़रत ज़ैद से आप (अलैहिस्सलाम) इतना प्रेम करते थे कि लोग उन्हें आप का बेटा कहने लगे, एक बार ऐसा हुआ कि हज़रत ज़ैद के पिता और भाई तक यह सूचना पहुंची कि वह मक्का में हैं, यह जानकर वह दोनों मक्का आए और हज़रत ज़ैद से मिले इसके उपरांत वह दोनों हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) के पास आए और कहा कि आप जो चाहें धनराशि ले लीजिए परंतु हमारे ज़ैद को हमारे साथ भेज दीजिए, यह सुनकर आप (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया

कि मुझे कोई धन नहीं चाहिए मगर यह फ़ैसला ज़ैद ही करे वह जिसके साथ चाहे जा सकता है, फिर जब हज़रत ज़ैद से पूछा गया तो आपने यह बात अपने पिता और भाई से स्पष्ट रूप से कह दी कि वह ग़ुलामी का जीवन तो व्यतीत कर सकते हैं परंतु हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) को कभी नहीं छोड़ सकते। (इशक़ ए रसूल) यहां से हमे मानवता के मार्गदर्शक हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) के आचरण रे बारे में पता चलता है कि आप समस्त मानवजाति में सर्वश्रेष्ठ आचरण वाले थे।

शत्रुओं को क्षमादान

सन 8 हिज्री में आप अपने साथ 12,000 लोगों की सेना लेकर मक्का को उन अधर्मी और क्रूर लोगों के शासन से मुक्त कराने के लिए मदीना से निकले, यह ख़बर जब मक्का वालों को हुई तो वह घबरा गए कि आज तो उनका अंत निश्चित है क्योंकि सारा जीवन उन्होंने हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) को परेशान करने, उन्हें दुख पहुंचाने, उनके चाहने वालों की हत्या करने और उनके सत्य के संदेश को झुठलाने में व्यतीत किया है यह ऐसे पाप थे जिन्हें उनकी द्रष्टि में कोई मनुष्य क्षमा नहीं कर सकता था मगर जब मानवता के मार्गदर्शक हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) ने मक्का में प्रवेश किया आपने आम ऐलान करा दिया कि जो हथियार डाल दे वह सुरक्षित है, जो अबू सुफ़यान के घर में चला जाए वह सुरक्षित है, जो अपने द्वार और खिड़कियाँ बंद कर ले वह सुरक्षित है, जो हरम में चला जाए वह सुरक्षित है, और जब आपके समक्ष उन लोगों को उपस्थित कीया गया जो

आपके अपराधी थे, जिन्होंने आप के अपनों की हत्या की थी, कोई और व्यक्ति होता तो सब को म्रत्यु दंड देता मगर यहां तो मानवता के मार्गदर्शक स्वयं हैं, पैगंबर हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) ने प्रत्येक को क्षमा कर दिया और मक्का के समस्त लोग मुसलमान हो गए।

निष्कर्ष

निसंदेह पैगंबर हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) का जीवन हमारे लिए एक सुंदर संदेश है जो हमें दया, उदारता, वीरता, सत्य, शांति जैसे गुणों की शिक्षा देता है और यह भी अवगत कराता है कि जिनका अस्तित्व ही स्वयं समस्त संसार के लिए रहमत व करुणा हो उनका संदेश इस्लाम कभी किसी निर्दोष को दुख पहुंचाने की अनुमति नहीं दे सकता। समाज के हर शिक्षित नागरिक को चाहिए कि वह पैगंबर हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) के जीवन को पढ़े और सीख प्राप्त करे जिससे कि समाज में सकारात्मक ऊर्जा फैले एवं बुराईयों का विनाश हो और आपसी सौहार्द की भावना बढ़े। इसी के साथ अपनी वाणी को विराम देना चाहूँगा।

लेखक:

फ़रदीन अहमद ख़ान रज़वी

पीलीभीत, उ॰ प्र॰, भारत